दैनिक साधना विधि

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

संकलन एवं सम्पादन
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२ ००१ (राज०)
फोन : 0291-2432209, 2433623
फैक्स : 0291-2432010

संस्करण	:	'जनवरी' 2010
प्रति	:	6000
मूल्य	:	30/-
मुद्रक	:	सुदर्शन प्रिन्टर्स, 487/505, पीरागढ़ी, दिल्ली - 87 फोन : 25258019

पूज्य गुरूदेव
डॉ० नारायण दत श्रीमाली

अनुक्रम

दैनिक साधना विधि	०५
दैनिक गुरु पादुका पूजन	१७
आरती	४५
मंत्र साधना में सफलता के उपाय	५४
श्री निखिलेश्वरानन्द कवचम्	५५

दैनिक साधना विधि
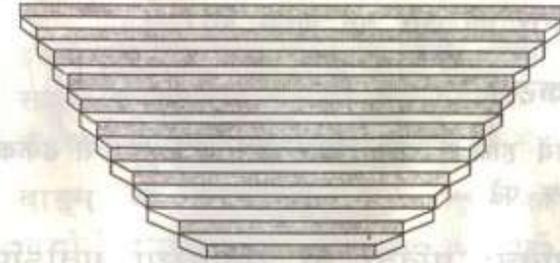
वास्तव में वे ही साधक धन्य हैं, जिन्होंने इस घोर भौतिक युग में साधना मार्ग का आश्रय लिया है। निश्चित ही वे सामान्य व्यक्तियों से 'कुछ' नहीं वरन् 'बहुत कुछ' अलग हटकर हैं। उनका सौभाग्य इससे भी सहस्त्र गुना हो जाता है, कि उन्हें पूज्य गुरुदेव "डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी" जैसे जीवन्त और चैतन्य गुरु का वरद हस्त प्राप्त है।

साधना ही जीवन की वह श्रेयस्कर तथा श्रेष्ठ विधा है, जिससे जीवन में सफलताएं मिलने के साथ-साथ अद्वितीय व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

साधना के महत्त्व को समझने के इच्छुक, पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आने वाले साधकों की यह कामना रही है, कि उन्हें उस प्रारम्भिक प्रक्रिया का ज्ञान हो, जिसे वे दैनिक पूजन में सम्मिलित कर सकें।

दैनिक साधना करने से पूर्व यह आवश्यक है, कि साधक के पास पीला आसन (पीले कपड़े), पीली धोती, गुरु मंत्र चादर,

पंचपात्र, गंध, अक्षत, अगरबत्ती, दीप और नैवेद्य अवश्य हो। आपके पास 'गुरुदेव का प्राण प्रतिष्ठित लैमिनेटेड चित्र' होना आवश्यक है, जिसका आप स्नान आदि करवा कर पूजन कर सकें। साथ ही ताम्रपत्र पर अंकित "गुरु यंत्र", "स्फटिक माला" अथवा "रुद्राक्ष माला" भी आवश्यक है। नित्य स्नान करने के उपरान्त स्वच्छ धुली धोती तथा गुरु पीताम्बर पहनकर ही गुरु पूजन तथा मंत्र जप के निमित्त पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठें।

पवित्रीकरण

बायें हाथ में जल लेकर उसे दायें हाथ से ढककर निम्न मंत्र पढ़ें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इस अभिमंत्रित जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कें, जिससे आन्तरिक और बाह्य शुद्धि हो।

आचमन

मन, वाणी तथा हृदय की शुद्धि के लिए पंचपात्र से आचमनी द्वारा जल लेकर तीन बार निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ पियें –

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

शिखा बन्धन

तदुपरान्त शिखा पर दाहिना हाथ रखकर दैवी शक्ति का

स्थापन करें, जिससे साधना पथ में प्रवृत्त होने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त हो सके –

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।।

न्यास

इसके उपरान्त मंत्रों के द्वारा अपने सम्पूर्ण शरीर को साधना के लिए पुष्ट व सबल बनाएं। प्रत्येक मंत्र उच्चारण के साथ सम्बन्धित अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करें–

ॐ वाङ्ग मे आस्येऽस्तु - मुख को स्पर्श करें
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु -नासिका के दोनों छिद्रों को
ॐ चक्षुर्मे तेजोऽस्तु - दोनों नेत्रों को
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु - दोनों कानों को
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु - दोनों बाजुओं को
ॐ अरिष्टानि मे अंगानि सन्तु - सम्पूर्ण शरीर को

आसन पूजन

अब अपने आसन के नीचे कुंकुम या चन्दन से त्रिकोण बनाकर उस पर अक्षत, चन्दन व पुष्प निम्न मंत्र बोलते हुए समर्पित करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

दिग् बन्धन

बायें हाथ में जल या चावल लेकर दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में ऊपर व नीचे छिड़कें –

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूताः भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

गणेश स्मरण

तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करें, प्रत्येक कार्य करने के पूर्व भी इन बारह नामों का स्मरण सिद्धिदायक माना गया है –

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतु र्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

श्री गुरू पूजन

अस्थि चर्म युक्त देह को ही गुरु नहीं कहते अपितु इस देह में जो ज्ञान समाहित है, उसे 'गुरु' कहते हैं। इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए उन्होंने जो तप और त्याग किया है, हम उन्हें नमन करते हैं, उस ऊर्ध्वमुखी ज्ञान से जो तेजस्विता प्राप्त हुई है, हम उसका अभिनन्दन करते हैं।

हमने ईश्वर को तो देखा नहीं, पर उसके सदृश गुरु को अवश्य देखा है, जो इस देह को दिव्य आलोक से आलोकित कर उस ब्रह्म में लीन करने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं, जो मानव का अन्तिम लक्ष्य है।
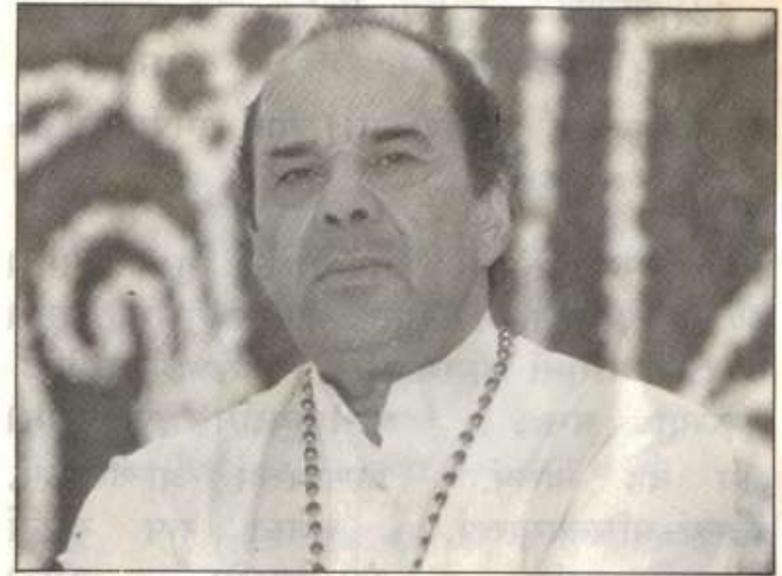
इसीलिए शास्त्रों में 'गुरु' का महत्त्व सभी देवताओं से ऊंचा माना गया है। गुरु का पूजन सबसे पहले किया जाता है। ईश्वर से भी पूर्व गुरु की वन्दना करना शास्त्र सम्मत कही गयी है।

साधकों के उपयोगार्थ गुरु पूजन विधि नीचे की पंक्तियों में प्रस्तुत की जा रही है –

श्री गुरू ध्यान

द्विदल कमलमध्ये बद्ध संवित्समुद्रं।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्॥
श्रुतिशिरसि विभान्तं बोधमार्तण्ड मूर्तिं।
शमित तिमिरशोकं श्री गुरुं भावयामि॥
हृद्यंबुजे कर्णिक मध्यसंस्थं।
सिंहासने संस्थित दिव्यमूर्तिम्॥

ध्यायेद् गुरुं चन्द्रशिला प्रकाशं।
चित्पुस्तिकाभीष्टवरं दधानम्।।
श्रीगुरु चरणकमलेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः।
ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्श-हेतवे श्रीपरम गुरुभ्यो नमः।
ॐ स्वात्मारामो पंजरविलीन तेजसे श्रीपारमेष्ठि गुरुभ्यो नमः, आवाहयामि पूजयामि।
मम देह स्वरुपं, प्राणस्वरुपं आत्मस्वरुपं, चिन्त्यं-अचिन्त्यस्वरुपं, समस्त रुप रुपत्वं गुरुमावाहयामि, स्थापयामि नमः।

आसन

ॐ इदं विष्णोर् विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा (गूं) सुरे स्वाहा।।
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।।
आसन के लिए पुष्प चढ़ावें।

पाद्य (चरण धोने के लिए दो आचमनी जल चढ़ावें)

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभि र्यजत्राः।
स्थिरैरंगै स्तुष्टुवा (गूं) सस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

अर्घ्य (दाएं हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें)

नमस्ते देव देवेश! नमस्ते करुणाम्बुजे।
करुणां कुरु मे देव! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।।

स्नान (चरणों में जल अर्पित करें)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति।
नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं च समर्पयामि। पुनः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के बाद पुनः आचमनी से तीन बार जल चढ़ाएं। फिर चित्र/यंत्र को अच्छी तरह से पोंछ दें।

वस्त्र (वस्त्र अथवा मौलि के दो टुकड़े अर्पित करें)

सर्वभूषादिके सौम्ये लोक लज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां वासिसे शुभे।।
श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।
वस्त्र समर्पण के बाद पुनः आचमन करें।

चन्दन

ॐ महावाक्योत्थ विज्ञानं गन्धाढ्यं सुमनोहरं।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः चन्दनं समर्पयामि।

अक्षत (बिना टूटे हुए चावल अर्थात् अक्षत अर्पित करें)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प (स्वच्छ सुन्दर पुष्प चरणों में अर्पित करें)

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः पुष्पं बिल्वपत्रं च समर्पयामि।

इसके पश्चात् अष्टोत्तरशत आदि गुरु नामों से अर्चना करें। यदि श्री गुरु का ललाट पूजन करना हो, तो यहां 'नमोऽस्त्वनन्ताय' आदि मंत्रों से गन्धाक्षत–पुष्प अर्पित करें।

धूप (धूप दिखाएं)

वनस्पति रसोद्भूतः गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीप (दीप दिखाएं)

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ज्योतिः, सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि तन्नो गुरुः

प्रचोदयात्।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष (गूं) शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रांस्तथालोकां अकल्पयन्।

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि नानाऋतुफलानि च समर्पयामि।

नीराजन

ॐ इद (गूं) हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर। (गूं) सर्वगण (गूं) स्वस्तये॥
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।
ॐ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नैता विद्युतो कुतो यमग्निः।
समेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥
नीराजनं निर्मलदीप्तिमद्भिर, दीपांकुरैरुज्ज्वलमुच्छ्रितैश्च।
मृत्युंजयाय त्रिपुरान्तकाय, घंटानिनादेन समर्पयामि॥

श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः नीराजनं दर्शयामि।

जल आरती

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

पुष्पांजलि (दोनों हाथों में पुष्प लेकर पुष्प चढ़ाएं)

ॐ न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके, अमृतत्वमानशुः।
परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते यद्यतयो विशन्ति॥

वेदान्तविज्ञान सुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद् यतः शुद्धसत्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले, परामृताः परिमुच्यन्त सर्वे॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः महेश्वरः॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

नाना-सुगन्ध-पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलि मया दत्ता गृहाण गुरुनायक॥

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः मंत्र-पुष्पांजलिं समर्पयामि॥

नमस्कार प्रार्थना-स्तुति (हाथ जोड़ें)

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्ते ते॥
वासनाद् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्॥
शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

विशेषार्घ्य

दाहिने हाथ में जल लें, उसमें कुंकुम, अक्षत मिलाकर निम्न संदर्भ का उच्चारण कर भूमि पर छोड़ दें–

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः विशेषार्घ्य समर्पयामि।

समर्पण

देव देव गुरुर्देव पूजां प्राप्य करोतु यत्।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो! पूजां पूर्णतरां कुरु॥
अनया पूजया श्रीमद्गुरुः प्रीयताम्।
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु॥

मंत्र

स्फटिक माला या रुद्राक्ष माला से सर्वप्रथम 4 माला गुरु मंत्र का जप करें, तत्पश्चात् एक–एक माला चेतना मंत्र एवं गायत्री मंत्र का भी जप करें –

गुरु मंत्र - ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः।

चेतना मंत्र - ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः।

गायत्री मंत्र - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

जप समर्पण मंत्र

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत् प्रसादान्महेश्वर॥

भावार्थ – समस्त गोपनीय विद्याओं को जानने वाले हे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे द्वारा समर्पित पूजा एवं मंत्र जप को स्वीकार करें तथा अभीष्ट सिद्धि प्रदान करें।

दैनिक
गुरु पादुका पूजन

आप पहले स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर लें और शारीरिक रूप से स्वच्छ होने के साथ–साथ मानसिक रूप से भी स्वस्थ होना आवश्यक है। मानसिक रूप से स्वस्थ होने के लिए तीन बार "ॐ कार" की ध्वनि करें और "ॐ कार" की ध्वनि सांस भर कर उस क्षण तक करें, जो भरी गई सांस की अंतिम स्टेज हो।

"ॐ कार" की ध्वनि के पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ कारेश्वराय नमः, मम शांति त्वां स्वच्छ प्राप्ति निमित्तं, मम मन वचन कर्मणा त्वां पूर्णतः शुद्ध, पवित्र, दिव्य, चैतन्य प्राप्ति निमित्तं, मम समस्त शरीरे सतां पूर्वा एतोऽस्मानं मस्तिष्क रूपेण, नख्र, शिख्र

पर्यन्तं पादयोः, पूर्णतः शुद्ध, सात्विक, पवित्र, चैतन्य, दिव्य त्वां तुभ्यं संपर्ददे।

गुरू स्थापन

आप प्रार्थना करें, कि आपके हृदय में गुरु स्थापित हों, हाथ जोड़ लें और गुरु स्थापन मंत्र का उच्चारण करें–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
ध्यान मूलं गुरो मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः पा॥
मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिं।
यत् कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्॥

श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

श्री गुरुं मम हृदये आवाहयामि मम हृदय कमलमध्ये स्थापयामि नमः। तत्रादौ आसनं त्वां पूर्वत एतोऽस्मानं गुरु पादुकां स्थापयामि नमः।

गुरु आसन के लिए पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर दें तथा हाथ में जल लेकर तीन बार आचमनी छोड़ें।

पाद्य

(दो आचमनी जल समर्पित करें)

ॐ पाद्यं ते पूर्वाहं सतामहं स कृते एतोऽस्मानं स पूर्वाः तुभ्यं संपर्ददे। पाद्यं समर्पयामि नमः, पाद्यान्ते अर्घ्यं समर्पयामि नमः।

अर्घ्य

अब कुंकुम और पुष्प जल में मिलाकर अर्घ्य समर्पित कीजिए –

पाद्यान्ते कुंकुमपुष्पैः सह अर्घ्यं समर्पयामि नमः। तत्रादौ आदर सत्कार रुपेण गुरुम् आवाहयामि, अर्घ्यं समर्पयामि नमः।

आत्मशुद्धि

आत्म शुद्धि के लिए दायें हाथ में जल लेकर तीन बार निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए जल पीयें –

ॐ नारायणाय नमः।

ॐ केशवाय नमः।
ॐ गोविन्दाय नमः।
तत्रादौ हस्त प्रक्षालनं
इसके बाद हाथ धो लीजिए।

पादुका स्थापन

एतोऽस्मानं सः तां पूर्वाहं एतोऽस्मानम् पूर्ण मन, वचन, कर्मणा पादयोः पादुकां स्थापयामि नमः।

अब पादुका को थाली में स्थापित करें, जब गुरु प्रत्यक्ष हों, तो गुरु प्रत्यक्ष पूजा करनी चाहिए अन्यथा उससे भी श्रेष्ठतम पूजा "गुरु पादुका पूजा" है। अतः थाली में पुष्पासन बिछा कर उस पर गुरु पादुकाओं को स्थापन करें –

गुरु पादुकां स्थापयामि नमः।

संकल्प

अब दाहिने हाथ में जल, पुष्प व कुंकुम लेकर संकल्प करें –

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्वेत वाराहकल्पे जम्बू द्वीपे मम मन वचन कर्मणां पूर्णता प्राप्ता निमित्तं गुरु पूजनान्ते तेषां महालक्ष्मीं आवाहयामि येषां स कृते कल्याण त्वां एतोऽस्मानं धन

धान्य यश प्रतिष्ठा ऐश्वर्य अभिवृद्धये मम पूर्णतः पदोन्नति प्राप्ताय निमित्तं सर्व सुख प्राप्ति निमित्तं आध्यात्मिक उन्नति प्राप्ताय निमित्तं सिद्धाश्रम ऋषि मुनि आशीर्वाद प्राप्ताय निमित्तं मम मन वचन कर्मणां पूर्णतः गुरु चरणारविन्दं समर्पयामि।

त्वां एतोऽस्मानं सा तव चरणे मम अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र का उच्चारण करें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम उच्चारण करें) गुरु चरणारविन्दे जल साक्षीरूपेण समर्पयामि नमः।

जल को भूमि पर छोड़ दें और पुनः हाथ जोड़ें।

आवाहन प्रार्थना

गुरुर्वै सदान्यं परमं पवित्रं ब्रह्मस्वरूपं चैतन्य रूपम्।
रुद्र स्वरूपाय विष्णुर्वदान्यै गुरुपादुकायां परिपूजयामि॥

त्वं ब्रह्म रूपं त्वं देव रूपं आशीर्वादं भवतं सदैवं।
क्रियमाण रूपं मम कार्य सिद्धिं गुरुपादुकां च परिपूजयामि॥

देवज्ञ चैतन्य भगवत् स्वरूपं सर्वत्र कार्यं विजयं भवेच्च।
आशीर्वादं पूर्वत एव नित्यं गुरु पादुकायां भवतं नमामि॥

सिद्धाश्रमोऽयं ऋषितुल्य देवं मम साधयेत त्वं गुरुत्वं सदैव।
परमं गुरु परमात्मरूपं गुरुश्च गुरुपादुकायां भवतं नमामि॥

आवाहयामि ऋषिमुनि सिद्धाश्रम च आवाहयामि।
सर्वत्र देवं दैवञ्च रूपं आवाहयामि गुरु पादुकानि॥

तत्रादौ समस्त ऋषि मुनि सिद्ध गंधर्व यक्ष किन्नर पूर्णतः सिद्धाश्रम स्थित परम गुरु परमात्म गुरु, पारमेष्ठि गुरु, परमपरमात्म गुरु, श्री सच्चिदानन्द सहिताय समस्त ऋषि मुनिं आवाहयामि मम अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माहं (अपना नाम बोलें) मम पूर्ण मन वचन कर्मणां शुद्धाय निमित्तं त्वां गुरु चरणारविन्दे मम गुरु मौद्गल गोत्रस्य यजुर्वेदशाखाध्यायी नारायणदत्त श्रीमाली तेषां चरणपादुकां पूजयामि नमः॥

तीन बार जल से (आचमनी में जल लेकर) प्रदक्षिणा करके जल भूमि पर छोड़ दें, हाथ में पुष्प लें, गुरुदेव का आवाहन करें, जिससे इसमें पूर्णतः समस्त दिक्–दिगन्त पूर्व, पश्चिम, उंत्तर, दक्षिण, यम, अग्नि, ईशान, वायव्य, नैर्ऋत्य, अतंरिक्ष और पाताल दसों दिशाओं में जो भी देव हैं, वे सभी मेरे इस शुभ कार्य में उपस्थित हों और आशीर्वाद दें, जिससे मैं मन, वचन, कर्म से पवित्र होता हुआ, समर्पित होता हुआ, उनका आशीर्वाद प्राप्त करता हुआ, समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करता हुआ ऊंचाई पर उठूं, इसी उद्देश्य के साथ में मैं गुरु पादुका के ऊपर इन पुष्पों को समर्पित कर रहा हूं –

त्वां पूर्णहं स्वाहा सदा भवन्यै भवतां सः हृदयं
सदैव पूर्वां सह क्रियते कल्याण त्वां दीर्घं हः।
गुरुचरणारविन्दे त्वां पादुकायां पुष्पं समर्पयामि नमः।

पुष्प के रूप में मेरा हृदय पूर्णता के साथ आपके चरणों में समर्पित है।

गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़कर भगवान गणपति का स्मरण करें–

सुमुखश्चैकन्दतश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषा मिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदैव तारा बलं चन्द्र बलं तदैव।
विद्या बलं दैव बलं तदैव लक्ष्मीपतेस्तेंघ्रियुगस्मरामि॥

यत्र योगेश्वर कृष्णः यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्री विजयो भूति र्ध्रुवानीति मतिर्मम॥

सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान महेश्वराः॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

ऋद्धि, सिद्धि सहितं महागणपतिं आवाहयामि स्थापयामि नमः।

किसी पात्र में पुष्प का आसन देकर भगवान गणपति के प्रतीक रूप में एक सुपारी की स्थापना करें।

स्नान

भगवान गणपति को जल से स्नान करायें –

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कुम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमासीत्।

तीन बार आचमनी से पुनः जल चढ़ायें।

तत्रादौ एतोऽस्मानं पंचामृत स्नानं कुर्यात्।

पंचामृत स्नान

दूध, दही, घी, शक्कर, शहद मिलाकर पंचामृत बनाएं तथा उससे स्नान कराएं –

पयो दधि घृतं मधु च शर्करा युतं पंचामृत देव्यो स्नानार्थम् ॐ पंचोवृतं सरस्वती घट वरो सरस्वती च धारार्थ देवं च भव सहितं दुग्ध, दधि, घृतं, मधु शर्करां तां पंचामृत रुपेण पंचामृत स्नानं सर्मर्पयामि नमः।

तत्रादौ पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि नमः।

स्नान (शुद्ध जल से स्नान कराएं)

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अपलिप्ता रौद्रा नभोरुपा पार्जन्याः पुष्पेण प्रक्षालयामि नमः।

गणपति को पुष्प से पोंछ कर उनका कुंकुम से तिलक करें।

तिलक

ॐ नमोऽस्त्वनंताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरु बाहवे सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटि युगधारिणे नमः।

उद्भावेण नमः कुंकुमेन तिलकं कृत्वा।

अक्षत

इसके बाद अक्षत चढ़ायें।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मतीः योजानविन्दते हरी।

अक्षतान्ते पुष्पाणि समर्पयामि नमः।

पुष्प

अब दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर अर्पित करें –

सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया नीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पुष्पाणि समर्पयामि नमः, पुष्पान्ते दीपं दर्शयामि नमः।

दीपक पूजन

दीपक का कुंकुम से पूजन करें –

ॐ आह्वं सर्व ददयोति तां विधं तं पूजा योगस्य
च धारण सरस्वती च अधिष्ठात्री
धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि नमः।
भो! दीप सूर्य रूपत्वं अन्धकार निवारक
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव।

हे दीप! आप सूर्य की तरह प्रकाशवान हैं, आप मेरे हृदय में स्थापित हों, जिससे मेरे मन में किसी प्रकार का अंधकार व्याप्त न हो, ज्ञान के प्रकाश में मैं निरंतर अग्रसर होता रहूं। आप की तथा सूर्य की साक्षी में अपने गुरु चरणों की 'दिव्य पादुका' का पूजन सम्पन्न कर रहा हूं।

शिखा बन्धन

चोटी या शिखा का बंधन करें। शिखा न होने पर सिर पर शिखा स्थान पर दाहिने हाथ से स्पर्श करें –

ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु
मानो अश्वेषुरीरिषः! मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
वधी हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।

तत्रादौ शिखा बन्धनम्, शिखाबन्धनान्ते तिलकं कृत्वा।

तिलक

अनामिका उंगली से अपने आपको तिलक करें।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः।
स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।
तत्रादौ स्वहस्तेन तिलकं कृत्वा।

हस्त प्रक्षालनम्

हाथ धो लीजिये।

पुष्प

अब थोड़े से पुष्प लेकर के गुरु पादुका पर चढ़ायें -

ॐ पुष्पेण प्रोक्षयामि सः पूर्ण परिवार सहितं
पत्नी पुत्र बन्धु बान्धव स कुटुम्ब सहितं
समस्त परिवार सहितं त्वां पूजयामि,
प्रारम्भिक क्रमेण पुष्पाणि त्वाम् समर्पयेत्।

तत्रादौ एतोऽस्मानं स कृते स्नानं कुर्यात्

जल स्नान

अब पादुकाओं को जल से स्नान कराइये –

ॐ वरुणस्योस्तंभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो

वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदनमासीत्।
भो! वरुणं आवाहयामि कल्पवृक्षस्य मूले शिव समाहित मूले च त्वं स्थितो ब्रह्मा मध्ये च मातृ मध्ये सुखतो तां स तुभ्यं सम्पर्ददे।

कलश पूजन

अब आपके पास जो कलश है, उसके चारों तरफ बिन्दी लगाइये, यह बिन्दी कुंकुम से लगानी है –

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः, पश्चिमे यजुर्वेदाय नमः, उत्तरे सामवेदाय नमः, दक्षिणे अथर्ववेदाय नमः। चतुर्वेदं आवाहयामि स्थापयामि नमः। कलश समस्तं भूलोक, सर्वलोक, ब्रह्मलोक तां सप्त लोकस्य प्रतीक रुपेण स कलशं स्थापयेत्।

कलश के नीचे अक्षत रखिए और उसके ऊपर कलश को स्थापित करें। फिर उसमें आचमनी या किसी अन्य पात्र से तीन बार जल डालें –

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

इसके बाद कलश में सुपारी डालिये –

सुवाहितां स पूर्वा पुंगीफलं महाविद्या नाग पुष्प च ताम्बूलं तां सर्वान् संस्कार रुपेण कलशे स्थापयामि नमः।
तत्रादौ कलशे कुंकुमं स्थापयामि नमः।

इस मंत्र को बोलते हुए कलश के अन्दर कुंकुम डालें।

कुंकुमेण स गन्धः एतोऽस्मानं तां पूजय तुभ्यं, इदमस्तु पूर्वे ज्योति पूजनं कलशे स्थापयामि नमः।
तत्रादौ नारिकेलं कलशे स्थापयामि।

नारियल स्थापन

कलश के ऊपर नारियल स्थापित करें। नारियल पर मौली बंधी होनी चाहिए।

तत्रादौ पूर्णत्व प्राप्ताय निमित्तं तां नारिकेलं फलं तत्र स्थापयेत्।

कलश स्थापन

इसके बाद दोनों हाथों में कलश को उठायें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाहितः
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणः स्थितः
कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तदीपा वसुन्धरा
ऋग्वेदो, यजुर्वेदः, सामवेदो ह्यथर्वणः
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाहिताः।
सर्वे समुद्रा सरितस्तीर्थानि जलदाः नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव, सर्व देवेभ्यो नमो नमः।

पवित्रिकरण

फिर कलश को अपनी जगह वापस स्थापन कर दें और कलश का जल अपने ऊपर छिड़क लें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।
पुण्डरीकाक्षाय नमः।

फिर कलश में तीन आचमनी जल डालें—

गंगा जलं आवाहयामि स्थापयामि नमः।
यमुना जलं आवाहयामि स्थापयामि नमः।
सर्वान् समुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि नमः।

जल स्नान

अब कलश के जल से वापस पादुका को स्नान करवाइये—

ॐ वरुणस्यो वर्णभाति वरुणस्यो ऋतसदृश
वरुणस्य मां वरुणस्था सदृशं आसीत्।
स्नानं समर्पयामि नमः।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ
सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य
ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋत सदनमासीत्।

दुग्ध स्नान

अब दूध से स्नान करवाइये —

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे

पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

आचमनी भर कर तीन बार जल चढ़ाइये —

पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि नमः।

दधि स्नान

(दही से स्नान कराएं)

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखारकत् प्रण आयू (गूं) षि तारिषत्।।

दधि स्नान के बाद पुनः जल से स्नान करावें —

ॐ सर्व शुद्धवालः च शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि नमः।
तत्रादौ घृत स्नानं कुर्यात्।

घृत स्नान

(अब घी से स्नान कराएं)

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमस्य
धाम अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम्।

घृतं स्नानं समर्पयामि नमः।
घृत स्नानान्ते तत्रादौ शुद्धोदक स्नानं कुर्यात।

शुद्धोदक स्नान

(पुनः शुद्ध जल से स्नान कराएं)

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्ध वालो मणिवालस्त
आश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय
पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा
नभोरुपा पार्जन्याः।

तत्रादौ मधु स्नानं समर्पयामि नमः।

मधु स्नान

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।

मधुनक्तमुतोष सो मधुमत पार्थव (गूं) रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिः मधुमानस्तु सूर्यः माध्वी र्गावो भवन्तुनः।

मधु स्नानं समर्पयामि नमः।
पुनः शुद्धोदक स्नानं कुर्यात्।
तत्रादौ शर्करा स्नानं कुर्यात्।

शर्करा स्नान

(अब शक्कर से स्नान कराएं)

ॐ सविस्ते निखन्दे निवसितो गुं शतः स गणेन संऋषि सोम पेन च न हवि पतिं पा।

तत्रादौ शर्करा स्नानं समर्पयामि नमः।
पुनः शुद्धोदक स्नानं कुर्यात्।

गंगाजल स्नान

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु
ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करे पृष्टानि ते रवे
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकरः।

पादुका को हाथ में लेकर अच्छी तरह स्नान करावें।

पूर्ण स्नानं कुर्यात्।

पादुका स्थापन

थाली को हटा दीजिये और दूसरी थाली लेकर उसमें स्वस्तिक का चिन्ह बनाइये और पादुका को वस्त्र से अच्छी तरह से पोंछ लें और स्थापित करें तथा पादुकाओं के नीचे पुष्प रखें–

आसनम् समर्पयामि नमः।

ॐ सः पूर्वा एतोऽस्मानं सः कृते दीर्घो गुरु पादुकां आसनं समर्पयामि नमः।

आसनान्ते अंगुष्ठरूपेण तिलकं कुर्यात्।

तिलक

दोनों पादुकाओं पर दाएं हाथ के अंगूठे से तिलक करें–

ॐ नमो स्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्र पादाक्षिशिरोरुबाहवे

सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटि युग धारिणे नमः।

तत्रादौ कुंकुमं विलेप्य।

कुंकुम

अब पादुका पर कुंकुम से तिलक करें –

कुंकुमान पूर्वा एतोऽस्मानं सौभाग्यं द्रव्यं समर्पयामि नमः।

सौभाग्यं लभ्यते एतोऽस्मानं तिलकं कृत्वा अक्षतान् समर्पयामि नमः।

ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्य प्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठयो मती योजान् विन्दते हरी।

तत्रादौ एतोऽस्मानं सुगन्ध द्रव्यं समर्पयामि नमः।

सुगन्धित द्रव्य

इसके बाद सुगन्धित द्रव्य चढ़ावें –

सौभाग्यं द्रव्यं समर्पयामि नमः।
तत्रादौ पुनः अक्षतं समर्पयामि नमः।
ॐ अक्षन्नमी मदन्त दुतिमदन्त।
भूति पूर्णत्व प्राप्ता निमित्तं।
अक्षतान्ते पूर्णाः।

यज्ञोपवीत

हाथ में यज्ञोपवीत लें –

यज्ञोपवीत इति सुतलं छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः -

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यमग्रचं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। तेनत्वां प्रतिगृह्यामि, यज्ञोपवीतं प्रजापत्यं सहितं पुरुष आयुष्यं मन वचन प्रति शुद्धं यज्ञोपवीतं बलस्य वीर्य

प्रथयामि तत्रादौ यज्ञोपवीतान्ते पुनः तिलकं कृत्वा।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति न पूषा विश्व वेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

तत्रादौ कुंकुमेन तिलकं कृत्वा।

तत्रादौ एतोऽस्मानं वस्त्रं समर्पयामि नमः।

वस्त्र

ॐ युवा सुवासा परिवीत आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः तं धीरासः कवयः उन्नयन्ति साध्यो मन सः देवयन्तः।

वस्त्रं समर्पयामि नमः।

वस्त्रान्ते पुण्य फल प्राप्ति निमित्तं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि नमः।

नैवेद्य

स इखित्वा ईखित्वोर्णत्वा स पूर्वा लिंगोवतां देवता स दीर्घोवतां,

नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष (गूं) शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रां स्तथा लोकान् अकल्पयान्।

आचमन

इसके बाद नैवेद्य के चारों ओर जल की प्रदक्षिणा करें–

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ भक्ष्य भोज्य धेनु मुद्रां मत्स्य मुद्रां च प्रदर्शय।

पूर्णता प्राप्ति निमित्तं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

नैवेद्यान्ते फलं समर्पयामि नमः।

फल

(पादुका पर मौसमी फल अर्पित करें)

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

फलानि समर्पयामि नमः।

फलान्ते स कृते एतोऽस्मानं स पूर्णत्वं पूर्ण नारिकेलं
एतोऽस्मानं पूर्ण विविध फलानि समर्पयामि नमः।
तत्रादौ त्वं पूर्णत्वाम् फलानि समर्पयामि नमः।

इसके अलावा भी कोई फल आदि हो, तो उसे रख दीजिए।

ताम्बूल

फलान्ते ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

पान का पत्ता, लौंग और सुपारी रखें।

तत्रादौ पुनः एतोऽस्मानं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

कलशात् नारिकेलं गृह्णीयात्।

नारियल

कलश के ऊपर जो नारियल है, उसे अपने दोनों हाथों में ले लें –

यत्रा ते धृतस्य धृता ते धारणे विनियोगः धी ब्रह्मर धृता वचना यत्रास्व यत्रा भर्गो देवानां दक्षिणाये सागरस्य महालक्ष्म्यै सम्पूर्णयते सप्रभावान् जपा मम त्वां अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं . . . अमुक शर्माऽहं . . . त्वां पूर्ण बल बुद्धि विद्या पूर्णत्वं त्वां चरणे नारिकेल फल गृह्णाति त्वां चरणे समर्पयामि नमः।

मैं अपना बल, बुद्धि, समस्त शरीर आपके चरणों में इस नारियल के रूप में आपको समर्पित कर रहा हूं।

गुरू स्मरण

हाथ जोड़ लीजिये–

गुर्वै सदाहं भवतं भव सदैव ऐता सदैवं।
सदा प्रसन्नार्थ रूपं सदैवं सदैवं यत्र रूप मेव।।
कृपात्र भवेत त्वां त्रिभुवनमेव सिन्धु सदाहं।
शरण्यं गतं वै शरण्यं प्रसन्नार्थ रुप भवेत् तम्।।
आवाहनं त्वमेवं शरण्यं प्रवृत्ति आशीर्वाद भवेतं
त्वमेव रूपा पूर्ण मदैव नित्यं।।
भवेतां नित्यं सुदीर्घ नित्यं चिन्त्यं विचिन्त्यं

त्वां चरणारविन्दे मम मस्तक त्वां समर्पयामि।।

अपने सिर को झुका कर पादुका से स्पर्श कराएं।

दिक् पूजन

कुंकुम से दसों दिशाओं को तिलक करिये।

पूर्वे इन्द्राय नमः।

श्री इन्द्रं स्थापयामि नमः।

दक्षिणे यमाय नमः।

श्री यमं स्थापयामि नमः।

पश्चिमे वरुणाय नमः।

श्री वरुणं स्थापयामि नमः।

उत्तरे कुबेराय नमः।

श्री कुबेरं स्थापयामि नमः।

उत्तरे अन्तरिक्षं स्थापयामि। विष्णुर्विष्णुं स्थापयामि वास्तु देवतां स्थापयामि, दश दिग्पाल समस्त दिग् देवता यक्ष, गन्धर्व, किन्नर कुलं समस्तं स्थापयामि पूजयामि नमः।

हाथ में जल लेकर छोड़ दें।

तत्रादौ पुष्पार्घ्यं समर्पयामि नमः।

पुष्प माला

(फूलों की एक माला पादुका पर चढ़ाएं)

गुरुत्व त्वां पुष्पमाल्यरुपेण समस्तं शिष्येण

समस्तं पुष्परुपेण त्वां किंचित रुपेण त्वां चरणे समर्पयामि नमः।

पुष्प माला का अर्थ है, जिस प्रकार से माला के पुष्प आपस में जुड़े हुए हैं, उसी प्रकार से हम आपस में जुड़े हुए आपके चरणों में समर्पित हों।

पुष्पमालां समर्पयामि नमः।

तत्रादौ गुरु पादुका पंचकं कुर्यात्।

गुरू पादुका पंचक

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यां
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यां।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्या
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम्।।

ऐंकार ह्रींकार रहस्ययुक्त
श्रींकारगूढार्थ महाविभूत्या।
ॐकार मर्म प्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम्।।

होमाग्निहोत्राग्नि हविष्य होतृ
होमादिसर्वाकृति भासमानं।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम्।।

अनंत संसार समुद्रतार
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां।
जाड्याब्धिसंशोषण बाडवाभ्यां

नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम्।।
कामादिसर्प व्रजगरुड़ाभ्यां
विवेक वैराग्य निधिप्रदाभ्यां।
बोधप्रदाभ्यां द्रुत मोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम्।।

तत्रादौ सिद्धाश्रम पूजनं कुर्यात्।

सिद्धाश्रम पूजन

सिद्धाश्रमस्थ समस्त ऋषि मुनि सिद्ध गन्धर्व, यक्षान् पूर्वां त्वां परम गुरु पारमेष्ठि गुरु पूर्ण रूपेण त्वं आवाहयामि मम पूर्णस्य त्वां चरणारविन्दे तुभ्यं सम्पर्ददे।

स्थापन

एक तरफ चावल की ढेरी बना लीजिए तथा उसके ऊपर सुपारी रख लीजिए और स्वामी सच्चिदानन्द जी से प्रार्थना करें, कि वे आपके हृदय में स्थापित हों –

गुरुत्वं सदैवं पूर्ण मदैव रूपं,
साक्षात् परब्रह्म रूपं त्वमेवं।
आवाहयामि मम पूजनार्थं तदैव रूपं;
भगवन्नमस्ते आवाहयामि स्थापयामि नमः।।

पूजन

तत्रादौ कुंकुमं समर्पयेत्।

कुंकुमान्ते एतोऽस्मानं अक्षतान् समर्पयामि नमः।

ॐ अक्षतान्ते पुष्पाणि समर्पयामि तां ते पूर्वाहं ते पुष्पं समर्पयामि नमः। पुष्पान्ते नाना सुगन्धानि सुगन्धमाले माला इत्यादि भुवयातं पूजार्थं पुष्पाणि ते पुष्पं समर्पयामि नमः।

पुष्पान्ते धूपं दीपं दर्शयामि नमः।
दीपान्ते नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

नैवेद्यान्ते समस्त पुष्प पल्लवं ते धूपं दीपं ते च आसनं पूर्वान्ते दीर्घो आसनाय पारमेष्ठि गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नमः।

परमेष्ठि गुरू आवाहन

दोनों हाथों में पुष्प लेकर पारमेष्ठि गुरु को अर्पित करें व प्रार्थना करें कि वे इस पूजन में आकर आपको आशीर्वाद दें–

तां पूर्वा ऐतोऽस्मानं पारमेष्ठि गुरु स्वामी सच्चिदानन्द रूपेण आवाहयामि मम सिद्धाश्रमस्थ समस्त ऋषि मुनि गंधर्व किन्नर त्वां पूर्णत्व अप्सरा सहितं आवाहयामि समस्तं स्थापयामि नमः।

पुष्प कुंकुम लेकर पादुका पर चढ़ा दें। हाथ जोड़ लीजिये।

पूर्वां पवित्रं तां मम समस्त सौख्य एतोऽस्मानं स कृते कल्याणं स मन वचन कर्मणा पवित्र, शुद्ध,

सात्विक पूर्ण, समस्त दुःख दोष, दारिद्र्य निवारणार्थं, सुख, सौभाग्य, धन, धान्य, यश, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्यं त्वां पूर्ण आशीर्वाद प्राप्तये निमित्तं त्वां पुष्प रूपेण मम हृदये रोम प्रतिरोम त्वां चरणारविन्दे समर्पयामि नमः।

तत्रादौ सिद्धाश्रम पंचकं कुर्यात्।

सिद्धाश्रम पंचक

हाथ जोड़ कर पूर्ण भक्तिभाव से नतमस्तक होते हुए सिद्धाश्रम पंचक का उच्चारण करें–

गुरुत्वं सदैवं पूर्ण तदैव,
भाग्येन देवो भवदेव नित्यं।
अहोभवां मम पूर्ण सिन्धुं;
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

त्वं मातृ रूपं पितृ स्वरूपं,
बन्धु स्वरूपं आत्म स्वरूपं।
चैतन्य रूपं पूर्णत्व रूपं;
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

न तातो न माता न बन्धु र्न भ्राता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो र्न भर्ता।
न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममेवं;
गतिस्त्वं मतिस्त्वं गुरुत्वं शरण्यं॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो,
महाक्षीण दीनः सदा जाड्य वक्तो।
विपत्ति प्रविष्ट सदाहं भजामि;
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

त्वं मातृरूपं त्वं पितृ रूपं,
सदैवं सदैवं कृपा सिन्धु रूपं।
त्वमेव शरण्यं त्वमेव शरण्यं;
गुरुत्वं सदैवं गुरुत्वं शरण्यं॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

न जानामि मंत्रं न जानामि तंत्रं,
न योगं न पूजां न ध्यानं वदामि।
न जानामि चैतन्य ज्ञानं स्वरूपं;
एकोहि रूपं गुरुत्वं शरण्यं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

एकोहि नामं एकोहि कार्यं,
एकोहि ध्यानं एकोहि ज्ञानं।
आज्ञां सदैवं परिपालयन्ति;
त्वमेवं शरण्यं त्वमेवं शरण्यं॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

त्वं ज्ञात रूपं त्वं अज्ञात रूपं,
मम देह रूपं मम प्राण रूपं।
पूर्णत्व देहं मम प्राण रूपं;
त्वमेवं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ....

अनया पूजया सांगाय सपरिवाराय सिद्धिकार्य पूर्णत्वं पूर्ण समर्पण देहं समर्पयामि मम वचन कर्मणां पूर्ण आज्ञां परिपालयन्ति पात्र रूपेण त्वां चरणे समर्पयामि नमः।

समर्पण प्रार्थना

हाथ में पुष्प लें –

ॐ पूर्णत्व प्राप्ताय पूर्णां हरिदारा इदं वचसा पुनराकृतो वस्त्रे सदैवं इदं गुं सदकृतो पूर्णत्व प्राप्ति रूपेण मन वचन कर्म अस्तित्व कार्य जीर्ण त्वं आज्ञां परिपालयन्ति सिद्धाश्रमं प्रापयन्ति पूर्ण भौतिक धन धान्य यश ऐश्वर्य प्रतिष्ठा सुख सौभाग्य प्राप्ताय निमित्तं त्वां चरणारविन्दे परिपूजयन्ति मम समस्त शरीरे मन प्राण त्वां समर्पयामि मम समस्त विकार काम क्रोध लोभ मोह अहंकारं पूर्ण सिद्ध चैतन्य रूपेण त्वां चरणे समर्पयामि नमः।

(श्री गुरु पादुका पूजनं सम्पूर्णम्।)

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महश्वेरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

ध्यान मूलं गुरो मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदं।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

गुरुकृपा हि केवलं, गुरुकृपा हि केवलं।
गुरुकृपा हि केवलं, गुरुकृपा हि केवलं।।

निखिल पंच रत्न

साकार गुणात्मक ब्रह्म मयं, शिष्यत्वं पूर्ण प्रदाय नयं।
त्वं ब्रह्म मयं संन्यास मयं, निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो।।

करुणा वर अब्ज दया देहं, लय बीज प्रमाणं सृष्टि करं।
त्वं मंत्र मयं त्वं तंत्र मयं, निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो।।

कर्मेश विधेश सुरेश मयं, सिद्धाश्रम योगिन् सांख्य स्वयं।
त्वं ज्ञान मयं त्वं तत्व मयं, निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो।।

अति दिव्य सु देह सकोटि छवि, मम नेत्र चकोर दृगात्म मयं।
सुखदं वरदं वर साध्य मयं, निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो।।

त्वं ज्योतिमयं त्वं ज्ञानमयं, त्वं शिष्यमयं त्वं प्राणमयं।
मम आर्तव शिष्यत् त्राण प्रभो! निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो।।

निखिलेश्वरं

निखिलेश्वरं, भुवनेश्वरं, भवनेश्वरं, यजनेश्वरं।
परमेश्वरं, मदनेश्वरं, सर्वेश्वरं, कामेश्वरं।
वरुणेश्वरं, करुणेश्वरं, भाग्येश्वरं, दक्षेश्वरं।
कार्येश्वरं, कर्मेश्वरं, पूर्णेश्वरं, निखिलेश्वरं।।1।।

यक्षेश्वरं, दक्षेश्वरं, अमलेश्वरं, कमलेश्वरं।
नाथेश्वरं, योगेश्वरं, गैरेश्वरं, नामेश्वरं।
लेखेश्वरं लक्ष्येश्वरं, मायेश्वरं, सकलेश्वरं।
नरमेश्वरं, शिष्येश्वरं विमलेश्वरं, निखिलेश्वरं।।2।।

पद्मेश्वरं, सर्वेश्वरं, देहेश्वरं, देवेश्वरं।
ज्ञानेश्वरं, तापेश्वरं, कायेश्वरं, वागीश्वरं।
मणिकेश्वरं, पलमेश्वरं, इच्छेश्वरं, पूर्णेश्वरं।
मंत्रेश्वरं तंत्रेश्वरं, यंत्रेश्वरं, निखिलेश्वरं।।3।।

एकेश्वरं, दिव्येश्वरं, भव्येश्वरं, शब्देश्वरं।
विधेश्वरं, परमेश्वरं, जयनेश्वरं, रक्षेश्वरं।
तारेश्वरं, शक्तीश्वरं, भक्तेश्वरं, भुवनेश्वरं।
धरणीश्वरं, व्याप्येश्वरं, सिद्धेश्वरं, निखिलेश्वरं।।4।।

श्रींशेश्वरं, ह्रींशेश्वरं, क्लींशेश्वरं, भाग्येश्वरं।
चिन्त्येश्वरं, एकेश्वरं, वागीश्वरं, कालेश्वरं।
तपसेश्वरं,. तापेश्वरं, सृष्टीश्वरं, तरणेश्वरं।
निखिलेश्वरं, निखिलेश्वरं, निखिलेश्वरं, निखिलेश्वरं।।5।।

वन्दना

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

नारायणो त्वं निखिलेश्वरो त्वं,
माता-पिता गुरु आत्म त्वमेवं।
ब्रह्मा त्वं विष्णुश्च रुद्रस्त्वमेवं;
सिद्धाश्रमो त्वं गुरुत्वं प्रणम्यम्।।

निखिलेश्वर आरती

जय संन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं।
जय-जय संन्यस्त्वं मा जय भगवद् रूपं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

हिमालये निवसति मुक्तं प्रकृति त्वां मध्ये।
विचरति गिरिवर गहने गह्वरसहि मुदितां।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

शान्तं वेशं भव्यं अद्वितीय रूपं।
व्याघ्रं वज्र विहन्तुं वक्षस्थल त्वं त्वं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

वेद पुराण शास्त्रं ज्योतिष महितत्त्वं।
मंत्र-तंत्र उद्धारय साध्यं सहि संहितं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

ऋषि दिव्यं देह भस्मं रुद्राक्षं सहितं।
विचरति निशिदिन प्राप्त्यें धन्य मही युक्तं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

सिद्धाश्रम सप्राणं मंत्रं सृष्टत्वं।
लक्षं लक्ष निहारत अद्वय अधि युक्तं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

भव्य विशालं नेत्रं भालं तेजस्वं।
लक्षं लक्ष निहारत अद्वय अधि युक्तं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

संगीत युक्तं आरार्तिकं पठत् यदि शृणुतं।
गुरु मोद वर प्राप्तुं शिष्यत्वं पूर्णं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

जय संन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं।
जय-जय संन्यस्त्वं मा जय भगवद् रूपं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं . . .

।। प्रार्थना ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आरती श्री गुरुदेव

जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी।
जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गुरु मूरत धारी।
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

जप तप तीरथ संयम दान विविध कीजै।
गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीजै।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे।
नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी।
ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारे।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

नाना पंथ जगत में निज–निज गुण गावें।
सब का सार बता कर गुरु मारग लावें।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी।
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशयहारी।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

तन मन धन सब अर्पण गुरु चरणन कीजै।
ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति दीजै।।
ॐ जय–जय–जय गुरुदेव . . .

गुरु समर्पण स्तुति

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया ...

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया ...

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया ...

यदि मानव का मुझे जनम मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया ...

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, साकार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया ...

मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया ...

शान्ति पाठ

कलश में रखे जल का चारों दिशाओं में अभिसिंचन करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ॐ शान्तिः। शान्तिः।। शांतिः।।।

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

मंत्र साधना में सफलता के उपाय

- शुद्ध पवित्र निर्विघ्न साधनात्मक स्थल हो।
- मंत्र, तंत्र, यंत्र, गुरु व अपने इष्ट के प्रति पूर्ण आस्था व समर्पण की भावना हो।
- साधक के मन में पूर्ण उत्साह, धैर्य एवं दृढ़ संकल्प शक्ति हो।
- मंत्र-सिद्ध व प्राणप्रतिष्ठित यंत्र तथा माला आदि उपकरण प्रयोग में लाएं।
- नित्य प्रति आत्म चिन्तन, आत्म निरीक्षण तथा आत्मशोधन करें।
- साधना शिविरों में भाग लेकर गुरुदेव से क्रियात्मक ज्ञान लें।
- गुरु से लगातार सम्पर्क बनाए रखें।
- गुरु से विधिवत् दीक्षा लेकर ही साधना पथ पर अग्रसर हों।

साधना में एक बार में सफलता न मिले, तो निराश न हों, पुनः जोश-खरोश के साथ साधना को 4-5 बार दोहरायें।

"गुरु गीता" तथा "निखिलेश्वरानन्द स्तवन" को अपने पूजन का अभिन्न अंग बनाएं।

श्री निखिलेश्वरानन्द कवचम्

शिरः सिद्धेश्वरः पातु, ललाटं च परात्परः।
नेत्रे निखिलेश्वरानन्दः नासिके नरकान्तकः॥1॥

कर्णौ कालात्मकः पातु, मुखं मंत्रेश्वरस्तथा।
कण्ठं रक्षतु वागीशः, भुजौ च भुवनेश्वरः॥2॥

स्कन्धौ कामेश्वरः पातु, हृदयं ब्रह्मवर्चसः।
नाभिं नारायणो रक्षेत्, ऊं ऊर्जस्वलोऽपि वै॥3॥

जानुनी सच्चिदानन्दः पातु, पादौ शिवात्मकः।
गुह्यं लयात्मकः पायात्, चित्तंचिन्तापहारकः॥4॥

मदनेशः मनः पातु, पृष्ठं पूर्णप्रदायकः।
पूर्वं रक्षतु तंत्रेशः, यंत्रेशः वारुणीं तथा॥5॥

उत्तरं श्रीधरः रक्षेत्, दक्षिणं दक्षिणेश्वर।
पातालं पातु सर्वज्ञः, ऊर्ध्वं मे प्राणसंज्ञकः॥6॥

कवचेनावृतो यस्तु यत्र कुत्रापि गच्छति।

तत्र सर्वत्र लाभः स्यात्, किंचिदत्र न संशयः।।७।।

यं यं चिन्तयते कामं, तं तं प्राप्नोति निश्चितं।
धनवान् बलवान् लोके, जायते समुपासकः।।८।।

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
नश्यन्ति सर्वविघ्नानि दर्शनात् कवचावृतम्।।९।।

य इदं कवचं पुण्यं, प्रातः पठति नित्यशः।
सिद्धाश्रम पदारूढः, ब्रह्मभावेन भूयते।।१०।।

यदि आप ने इन दीक्षाओं को नहीं लिया तो
आपने जीवन में कुछ भी नहीं किया

जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाती ये दिव्य दीक्षाएं

• ज्ञान दीक्षा • महालक्ष्मी दीक्षा • ऋण मुक्ति दीक्षा • रोग मुक्ति दीक्षा • धन्वन्तरी दीक्षा • जीवन मार्ग दीक्षा • शिवत्व प्राप्ति दीक्षा • महालक्ष्मी प्रत्यक्ष दीक्षा • प्रियतमा अप्सरा दीक्षा • कायाकल्प दीक्षा • शत्रुमर्दन दीक्षा • मुकदमों में सफलता दीक्षा • मनोवांछित कामना सिद्धि दीक्षा • भाग्योदय दीक्षा • कुण्डलिनी जागरण दीक्षा • भैरव दीक्षा • राजयोग दीक्षा • यक्षिणी दीक्षा • आत्म ज्ञान दीक्षा • काल ज्ञान दीक्षा • वैवाहिक योग दीक्षा • तंत्र सिद्धि दीक्षा • ध्यान सिद्धि दीक्षा • अभीष्ट सिद्धि दीक्षा • बगलामुखी दीक्षा • गुरु प्रत्यक्ष दीक्षा • राज्याभिषेक दीक्षा • चैतन्य लामा दीक्षा • साबर सिद्धि दीक्षा • उर्वशी सिद्धि दीक्षा • अप्सरा प्राप्ति दीक्षा • वीर वैताल सिद्धि दीक्षा • पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा • शत्रु बाधा निवारण दीक्षा • गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा • तारा महाविद्या सिद्धि दीक्षा • अनंग दीक्षा • गोम्पा दीक्षा • ब्रह्माण्ड दीक्षा • सम्मोहन दीक्षा • क्रिया योग दीक्षा • कायाकल्प दीक्षा • पापमोचनी दीक्षा • षोडश कला दीक्षा • गणेश सिद्धि दीक्षा • कुबेर सिद्धि दीक्षा • तंत्र साफल्य दीक्षा • दस महाविद्या दीक्षा • नेत्र चुम्बकत्व दीक्षा • भविष्य सिद्धि दीक्षा • सिद्धाश्रम प्राप्ति दीक्षा • लक्ष्मी कल्पवृक्ष दीक्षा • रतिकाम सौन्दर्य दीक्षा • सहस्त्रर जागरण दीक्षा • सर्व साधना सिद्धि दीक्षा।